बड़े लोगों का बचपन

विजयलक्ष्मी पंडित

भारतीय राजदूत

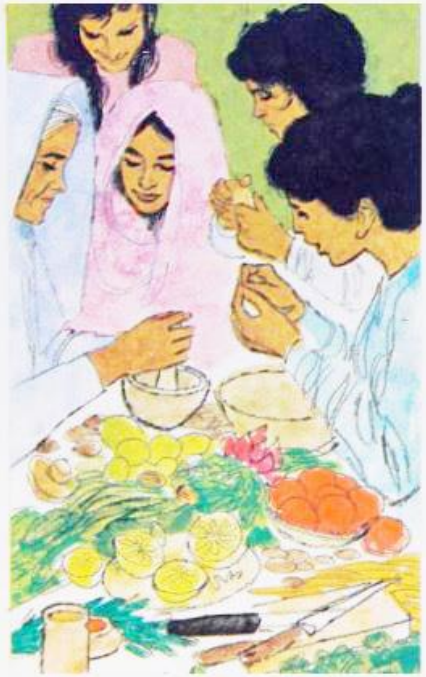

बाएं: बहनें रसोई में भारतीय व्यंजन बनाने में मदद करती थीं.

ऊपर: एक दिन नन्नी घास पर पढ़ रही थी कि एक कोबरा उसके सिर पर आकर झूमा.

जिस घर में स्वरूप कुमारी नेहरू का जन्म 1900 में हुआ था, उसे आनंद भवन (खुशी का निवास) कहा जाता था. उनसे ज्यादा खुश कोई और बच्चा नहीं हो सकता था. उनके पिता एक वकील और एक सुंदर और हंसमुख व्यक्ति थे.

एक अच्छे हिंदू होने के नाते उन्होंने अपने बड़े भाइयों के बच्चों और विधवाओं की देखभाल की. पर क्योंकि वो अपनी जाति के बाहर के तमाम लोगों से मिलते थे उस बात ने कई भारतीयों को परेशान किया. श्री नेहरू इलाहाबाद के पहले व्यक्ति थे जिनके पास अपनी मोटर कार थी. उनके बगीचे में एक स्विमिंग पूल और टेनिस कोर्ट, घर में बिजली की रोशनी और आधुनिक प्लंबिंग थी. उन्होंने ब्रिटिश जीवन शैली की प्रशंसा की और कई अंग्रेज अफसर उनके मित्र थे. श्री नेहरू यूरोपियन कपड़े पहनते थे और उन्होंने अपने घर के एक हिस्से को यूरोप की खूबसूरत चीजों से सजाया था. नन्नी अपने पिता से बहुत प्यार करती थी (नन्नी का अर्थ "छोटी" होता है.)

जब नन्नी पाँच वर्ष की थी तब उसने एक रोमांचक समाचार सुना. उसका भाई जवाहरलाल पढ़ाई के लिए इंग्लैंड जा रहा था, और वो और उसके माता-पिता उसे छोड़ने जा रहे थे. उसके बाद वे यूरोप का दौरा करने जा रहे थे. यूरोप में, नन्नी जहां भी जाती, वो आकर्षण का केंद्र बन जाती थी. वो छोटी और सुंदर थी. उसकी बड़ी-बड़ी आंखें और घुंघराले बाल थे, और वो अंग्रेजी बहुत सुंदर ढंग से बोलती थी. उसने अपना पांचवां जन्मदिन जर्मनी के बैड एम्स में बिताया और जश्न मनाने के लिए, उसके पिता ने 400 स्थानीय स्कूली बच्चों को एक पार्टी दी. उस दिन नन्नी उपहारों और प्रशंसाओं से भर गई, और एक अफवाह फैल गई कि उसके पिता एक भारतीय राजकुमार थे.

श्री नेहरू अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे, लेकिन वो नहीं चाहते थे कि वो बिगड़ैल और खाली सिर वाली बने. भारत लौटने के बाद उन्होंने नन्नी के लिए एक ब्रिटिश गवर्नेस नियुक्ति की और मिस हूपर नन्नी के साथ 17 वर्ष की आयु तक रहीं.

घर पहुँचने पर नन्नी की शिक्षा शुरू हुई, और बहुत जल्द ही वो यह सोचने लगी कि क्या वो भारतीय थी या अंग्रेजी. मिस हूपर ने उसका नाम छोटा करके "नान" कर दिया और जल्द ही सेभी ने उसे नान नेहरू बुलाने लगे. ज्यादातर समय वह लंदन से भेजे गए अंग्रेजी कपड़े, जूते और मोटे, काले मोज़े ही पहनती थी. वो शुद्ध अंग्रेजी बोलती थी और अक्सर अंग्रेजी खाना भी खाती थी. वो रविवार को मिस हूपर के साथ चर्च भी जाती थी. नान को अपने चचेरे भाइयों के साथ खेल खेलना पसंद थे, लेकिन माँ उसे यूरोपीय अंदाज़ में नाचने नहीं देती थीं.

नन्नी की माँ और उनकी विधवा मौसी गहरी धार्मिक थीं और उनसे नन्नी ने अपने देश के रीति-रिवाज सीखे. वो और उसकी बहन कृष्णा, विशेष भारतीय व्यंजन तैयार करने और प्राचीन भारतीय कहानियां सुनने के लिए रसोई में घंटों बिताती थीं. त्योहारों पर, वे साड़ी पहनकर अपनी माँ के साथ हिंदू मंदिर जाती थीं.

इलाहाबाद हिंदुओं के लिए एक पवित्र शहर था और साल के कुछ निश्चित दिनों में वहां सड़कों पर तीर्थयात्रियों का तांता लगा रहता था. 1916 में, जब नन्नी 16 वर्ष की थी और कृष्ण नौ वर्ष की थी, तब घर में उथल-पुथल मच गई. जवाहरलाल, कैंब्रिज से एक सुंदर युवक के रूप में लौटे थे और अब उनकी शादी होने वाली थी. माता-पिता ने उनके लिए कमला नाम की एक खूबसूरत लड़की को चुना था. लड़कियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब नेहरू के आधुनिक तरीकों की आदत डालने के लिए शादी से पहले कुछ समय के लिए कमला उनके साथ रहने आई.

गर्मियों में शादी के बाद पूरा परिवार छुट्टियों के लिए कश्मीर चला गया, और वहां एक अजीब बात हुई. एक दिन नन्नी घास पर लेटी हुई थी और पढ़ रही थी कि एक कोबरा उसके पास आया, उसने अपना फन खोला. एक पल के लिए नन्नी के सिर के ऊपर से उसने अपना फन पीछे-आगे लहराया. नन्नी हिलने-डुलने से बहुत डर रही थी, फिर सांप उसे बिना चोट पहुँचाए वहां से चला गया. बाद में, एक बूढ़े भविष्यवक्ता ने नान के परिवार को बताया कि वो देवताओं की विशेष कृपा का एक संकेत था.

लेकिन खुशी हासिल करने से पहले नान को बहुत दुख झेलने पड़े. जब नान ने शादी हुई, तो उसने अपना नाम फिर से बदल लिया और वो श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित बन गईं. अपने भाई की तरह जो भारत का प्रधान मंत्री बनने वाले थे, और अपने पिता के मित्र गांधी की तरह, वो भी भारत के स्वतंत्रता अभियान के दौरान जेल गईं. उनकी तीन बेटियाँ थीं, लेकिन जब उनके पति की मृत्यु हुई, तो वो गरीब बन गईं, क्योंकि केवल कोई पुत्र ही अपने पिता की संपत्ति का वारिस कर सकता था. इन परेशानियों के बाद ही श्रीमती पंडित व्यापक रूप से जानी जाने लगीं. 1961 में सेवानिवृत्त होने से पहले वह रूस और अमरीका में राजदूत, संयुक्त राष्ट्र की 8वीं महासभा की अध्यक्ष और लंदन में भारतीय उच्चायुक्त थीं.